राजस्थान में समन्वित बाल विकास योजना का क्रियान्वयन

297. श्री संतोष बागड़ोदिया : क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या राजस्थान में समन्वित बाल विकास योजना क्रियान्वित की जा रही है;

(ख) यदि हां, तो गत वर्षों के दौरान इस योजना में शामिल किए इस राज्य के क्षेत्रों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) उक्त अवधि के दौरान उक्त योजना से कितनी मातायें और बच्चे लाभान्वित हुए हैं और इस संबंध में अन्य विस्तृत ब्यौरा क्या है?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में युवा कार्य और खेल तथा महिला और बाल विकास विभागों में राज्य मंत्री (श्रीमती मारग्रेट आल्वा) : (क) जी, हां।

(ख) राजस्थान में पिछले 3 वित्तीय वर्षों के दौरान 28 केन्द्रीय प्रायोजित समेकित बाल विकास सेवायें (आई सी डी एस) परियोजनायें स्वीकृत की गयी हैं: आठ 1986-87 में और बीस 1987-88 में । इन परियोजनाओं के स्थान संलग्न विवरण-I में दिए गए हैं।

(ग) विवरण II संलग्न है।

विवरण-I

राजस्थान में पिछले तीन वित्तीय वर्षों के दौरान स्वीकृत केन्द्रीय प्रायोजित आई० सी० डी० एस० परियोजनाओं के स्थान

क्रम सं०	स्थान		स्वीकृति वर्ष
	जिला	ब्लाक/शहर	
1.	अजमेर	1. अजमेर शहर	1986-87
2.	बांसवाड़ा	2. बागीडोरा	—तदैव—
		3. पीपल खुन्ट	—तदैव—
		4. भूकिया	—तदैव—
3.	चित्तौड़गढ़	5. आरनोड	—तदैव—
4.	झुनझुनू	6. सूरजगढ़	—तदैव—
5.	सवाई माधोपुर	7. खण्डर	—तदैव—
6.	उदयपुर	8. धारीआवाड	—तदैव—
7.	बारमेड़	9. शिव	1987-88
		10. बालटोरा	—तदैव—
		11. बायाटु	—तदैव—
		12. सिन्दरी	—तदैव—
		13. बाड़मेर	—तदैव—
		14. धोरीमाना	—तदैव—

1	2	3	4	5
8.	चुरू	15.	सुजानगढ़	—तदैव—
		16.	डूंगरगढ़	—तदैव—
		17.	सरदारशहर	—तदैव—
		18.	रतनगढ़	—तदैव—
9.	जैसलमेर	19.	सुम	—तदैव—
		20.	पोखरण (सन्तारा)	—तदैव—
		21.	जैसलमेर	—तदैव—
10	जालोर	22.	जालोर	—तदैव—
11.	जोधपुर	23.	बप	—तदैव—
		24.	लुनी	—तदैव—
12.	नागौर	25.	जयाल	—तदैव—
		26.	मेरटा	—तदैव—
		27.	दिदवाना,	—तदैव—
		28.	मुन्डवा	—तदैव—

विवरण- II

पिछले 3 वर्षों के दौरान राजस्थान में विभिन्न समेकित बाल विकास योजना सेवाओं से लाभ प्राप्तकर्ताओं का ब्यौरा

मद	वित्तीय वर्ष के अन्त में		
	1986–87	1987–88	1988–89
1 2	3	4	5
1. पूरक पोषाहार			
(क) रिपोर्टिंग परियोजनाओं की संख्या .	52	71	93
(ख) रिपोर्टिंग परियोजनाओं में ऐसी सेवाएं उपलब्ध कराने वाले आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या . . .	5285	7885	10497
(ग) लाभप्राप्तकर्ताओं की संख्या			
(1) 0–6 वर्ष की आयु के बच्चों .	349990	491570	641570
(2) गर्भवती महिलाएं तथा शिशुवती माताएं . . .	69110	85200	106810
(3) कुल . . .	419100	576770	748380
2. स्कूल पूर्व शिक्षा			
(क) रिपोर्टिंग परियोजनाओं की संख्या .	52	71	93

1	2	4	5
	(ख) रिपोर्टिंग परियोजनाओं में ऐसी सेवाएं उपलब्ध कराने वाले आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या	5585	7687	10653
	(ग) कुल	180940	257700	351190
3.	**रोग प्रतिक्षण (विशेषकर उसी वित्तीय वर्ष में)**			
	(क) रिपोर्टिंग प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या . . .	38	32	21*
	(ख) निम्नलिखित रोगों के लगाए गए रोग प्रतिरोधन टीकों की संख्या :			
	(1) डी.पी.टी. . .	86123	89061	30991*
	(2) डी. टी. . . .	47299	34843	1318*
	(3) बी.सी.जी . .	89279	87647	23113*
	(4) पोलियो . . .	81015	74181	29294*
	(5) खसरा . . .	उपलब्ध नहीं	56273	25228*
	(6) टी.टी. (गर्भवती महिलाएं) .	40565	58212	16386*

टिप्पणी : 1, 2, 3, 4, और 5 के सामने दिए गए आंकड़े बच्चों के हैं और जनवरी, 1989 तक के हैं।

तीरंदाजी के खेल के स्तर को सुधारने के लिये कदम

298. **श्री संतोष बागड़ोदिया** : क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने खेल संगठनों को सुचारू और प्रभावी रूप से चलाने के लिए 1975 में दिशा-निर्देश जारी किये थे;

(ख) यदि हां, तो उनका ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या यह भी सही है कि गत चालीस वर्षों के दौरान तीरंदाजी के विकास में भारतीय तीरंदाजी संघ का योगदान नगण्य रहा है; और

(घ) यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है और देश में खिलाड़ियों को आधुनिक तीरंदाजी का प्रशिक्षण देने के लिए सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की जा रही है?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में युवा कार्य और खेल तथा महिला और बाल विकास विभागों में राज्य मंत्री (श्रीमती मारग्रेट अल्वा) : (क) और (ख) राष्ट्रीय खेल संघों/एसोसिएशनों के पदाधिकारियों के कार्यकाल पर सरकार ने सितम्बर 1975 में दिशानिर्देश जारी किए थे जिनके अनुसार राष्ट्रीय खेल संघ/एसोसिएशन के अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष लगातार दो कार्यकालों या 8 वर्षों तक, जो भी कम हो, ऐसा कार्य संभाल सकते हैं।

(ग) और (घ) भारतीय तीरंदाज अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे हैं लेकिन भारतीय खेल प्राधिकरण (एस०ए०आई०) द्वारा देश के आदिवासी क्षेत्रों से प्राकृतिक प्रतिभाशालियों का पता लगाने के लिए 1985-86 के दौरान विशेष क्षेत्र खेल योजना के अन्तर्गत तीरंदाजी परियोजना शुरू करने तक उन्होंने कोई महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं किया था। इन प्रयासों के परिणाम-स्वरूप तीरंदाजी में सर्वप्रथम पदक योजना के अन्तर्गत पता लगाए तथा प्रशिक्षित किए गए श्री श्याम लाल द्वारा जनवरी 1988 में कलकत्ता में आयोजित एशियाई कप तीरंदाजी चैम्पियनशिप में जीता